राज्य में वास करना

फ्रैंकलीन के द्वारा तैयार नोट्स

"स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए **धन** के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और उसके कारण आनन्दित होकर उसने अपना **सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।** मत्ती 13:44

"फिर स्वर्ग का राज्य सच्चे मोतियों को **खोजने** वाले एक व्यापारी के समान है। जब उसे **एक बहुमूल्य मोती मिला** तो उसने जाकर अपना **सब कुछ बेच दिया और उस मोती को खरीद लिया।** मत्ती 13:45-46

यीशु यहाँ हमें बता रहा है कि परमेश्वर का राज्य **बहुत बहुमूल्य है**, जो केवल खोजने से ही मिलता है, और जो बुद्धिमान होता है वह उसके **मूल्य को पहचानता है** तथा **उसे पाने के लिए सब कुछ देने को तैयार रहता है।**

परन्तु यदि हम **पहले** परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहें तो जो वस्तुएं हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं और जो चाहिए, वह सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी। मत्ती 6:33

यह इस बात का विषय है कि आपको क्या **प्रिय** लगता है। यह इस बात का **विषय** है कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है। यह इस बात का विषय है कि आपकी **वास्तविक इच्छा** क्या है। यह **प्राथमिकताओं** का विषय है।

- परमेश्वर के राज्य को आप कितना महत्व देते हैं?
- जिस तरह आपके जीवन के रहन – सहन है, उससे राज्य का क्या महत्व है?

"परमेश्वर के राज्य का आगमन दृश्य रूप में नहीं होगा ... क्योंकि देखो, **परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य है।"**

लूका 17:20-21

- यह वह स्थान है जहाँ राजा को स्वीकारा, उसका आदर और उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है।

और जब प्रभु यीशु मसीह को स्वीकारा, उसका आदर और उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है, तो उसका राज्य :

> आपके जीवन का आधार बन जाता है – जो आप करना चाहते हैं और जो भी आप करते हैं उन सब के अधिकार की केन्द्रीय वस्तु, उन्हें निर्देशित करने की शक्ति और प्रेरित करने का सामर्थ्य।

क्योंकि राजा इसलिए आया कि हम जीवन पाएं और बहुतायत का जीवन पाएं।

अतः हम जिस राज्य में रहते हैं, वह इस बात पर निर्भर करता है : हम क्या और किससे प्रेम करते हैं – हम क्या और जिसे सबसे अधिक चाहते हैं, वह यह निर्धारित करता है कि आप किस राज्य में रहते हैं।

जिस प्रकार यीशु ने कहा :

यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। यूहन्ना 14:15

1 यूहन्ना 2:15-16 **तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो।** यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है।

रोमियों 14:17 क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और मेल-मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।

- धार्मिकता (धर्मी जीवन – राजा की आज्ञा मानने) के द्वारा विश्वासी परमेश्वर के राज्य में रहता और वास करता है, जिसका परिणाम : शांति और आनंद है।

भजन संहिता 15 हे परमेश्वर **तेरे तम्बू में कौन रहेगा?** तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? वह जो **खराई** से चलता और **धर्म** के काम करता है, और हृदय से **सच** बोलता है; जो अपनी जीभ से **निन्दा नहीं करता,** और न अपने मित्र की **बुराई करता,** और न अपने पड़ोसी की **निन्दा** सुनता है; वह जिसकी दृष्टि में **निकम्मा मनुष्य तुच्छ है,** और जो यहोवा के डरवैयों का **आदर** करता है, **जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े;** जो अपना रूपया ब्याज पर नहीं देता, और निर्दोष की हानि करने के लिये घूस नहीं लेता है। जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा॥

भजन संहिता 97:2 **धार्मिकता** और **न्याय** उसके सिंहासन की नींव हैं।

- इस **संसार के राज्यों** का स्वामी संसार के राजकुमार है और सब राज्य उसके आधीन हैं (इफिसियों 2:2-3; लूका 4:5-8)

- जिस प्रकार **शैतान** ने प्रभु यीशु की परीक्षा ली, वैसे ही वह हमारी भी परीक्षा लेता है कि हम इस संसार के राज्यों के नियमों के अनुसार जीएं। और वह उस राह पर अनेक लोगों को पाता है।

- आप कौन से राज्य में रहते हैं यह इस बात से निर्धारित होता है आप किस राज्य के नियमों और सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं और उसके अनुसार जीते हैं। **यह चुनाव आपका है।**

    - लूका 6:46 "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो?

    - मत्ती 6:24 "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता …

इन दो राज्यों के बारे में ज़िक्र करते हुए यीशु ने इसका इस प्रकार से वर्णन किया : "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि **चौड़ा** है वह फाटक और **सरल** है वह मार्ग जो **विनाश** को पहुँचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि **सकेत** है वह फाटक और **कठिन** है वह मार्ग जो **जीवन** को पहुँचाता है; और थोड़े **हैं जो उसे पाते हैं।** मत्ती 7:13-14

दो मार्ग – जीवन जीने के दो तरीके – दो गंतव्य

आप एक राज्य में रहकर दूसरे राज्य के फल और आशीषों की अपेक्षा नहीं कर सकते।

एक बड़ी संख्या इस संसार के राज्य में, उसकी अधीनता में, और उसके मार्गों में रह रही है। "चौड़े फाटक" में प्रत्येक नास्तिक, अनीश्वरवादी और सब धर्मों का स्वागत किया जाता है, और "चौड़ा मार्ग" अपनी इच्छाओं के पीछे जाने और इच्छानुसार कार्यों को करने की स्वतंत्रता देता है।

- लूका 9:24 जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा

और बहुत कम हैं जो "सकरे फाटक" से प्रवेश करने और उसके राजा तथा उसके राज्य के पीछे चलने को तैयार हैं।

- लूका 9:24 जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।

दो मार्ग.....

साधारण गुनगुने धार्मिक जीवन बिताने वाले माता-पिता जिनका एक पैर परमेश्वर के राज्य में होता है और दूसरा संसार में अकसर इस बात का सामना करते हैं कि प्रभु के लिए उनके बच्चों की वचनबद्धता ठंडी पड़ी होती है।

मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि **तू न तो ठंडा है और न गर्म:** भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। इसलिये **कि तू गुनगुना है,** और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ। प्रकाशितवाक्य 3:15-16

गुनगुने माता पिता होने का परिणाम मत्ती 24 में है:

(3) उसके चेले एकान्त में उसके पास आकर कहने लगे, "हमें बता ... तेरे आने का तथा इस युग के अन्त का क्या चिह्न होगा?" ... (4) यीशु ने उनको उत्तर दिया, ... (12) **अधर्म** के **बढ़ने** के कारण **बहुतों का प्रेम ठंडा** पड़ जाएगा।

जैसे जैसे वे इस संसार के प्रति अपने प्रेम में और उसके मार्गों में अग्रसर होंगे ऐसा होगा।

भीड़ के पीछे **"चौड़े फाटक"** में से जाते हुए और संसार के **"चौड़े मार्ग"** को चुनने और स्वीकार करते हुए बहुत से लोग अपने जीवन में समस्याओं, हानियों और तकलीफों को ले कर आते हैं। शायद वे इस मार्ग पर चलना **"आनंद"** की बात समझते हैं और नहीं जानते कि यह **"विनाश की ओर"** जाता है।

- जब हमने इस चौड़े और आसान मार्ग को चुना तो हम सब ने इस संसार की राहों पर चलते हुए पीड़ाओं, दर्द और घावों को तथा उनसे भी गंभीर हानियों को उठाया।

हर पीढ़ी को ऐसे **अगुवे** चाहिए जो लोगों को **"जीवन की ओर जाने वाले सकरे मार्ग में ले जाए"** जैसा **मूसा** ने किया था, जिसने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से (संसार की प्रणाली में उच्च सम्माननीय स्थान को पाने से) **इनकार** किया। इसलिये कि उसे **पाप** में थोड़े दिन के **सुख भोगने** से परमेश्वर के लोगों के साथ **दुःख भोगना** अधिक उत्तम लगा। इब्रानियों 11:24-25

मूसा और परमेश्वर के लोग मिस्र में रह रहे हैं – जो इस संसार के राज्य का एक प्रकार है – फिरौन के अधिकार के अधीन, जो शैतान का प्रतीक है।

- हम सभी इस संसार के राज्य के माध्यमों और तरीकों से अच्छी तरह से परिचित हैं और उसके द्वारा जीए अर्थात उसमें जीए हैं।

- हम इस संसार के तरीकों में स्वाभाविक तौर से और आराम से कार्य करते हैं क्योंकि हम इसमें पले बढ़े हैं और इसके तरीकों से अच्छी तरह से परिचित हैं। यह हमारे खून में है।

परमेश्वर ने उन्हें अपनी अद्भुत सामर्थ्य से छुड़ाया और उन्हें अपने सेवक मूसा के द्वारा **स्वतंत्रता** में ले गया, जो अपने **चुनाव** के कारण अगुवा होने के **योग्य** था जैसा हमने उपरोक्त पद में देखा।

- परमेश्वर आज भी ऐसे अगुवों को ढूँढ़ रहा है। वह आपको ढूँढ़ रहा है।

उसने उनकी "सकरे मार्ग" में अगुवाई की और उन्हें उनके गंतव्य तक अर्थात उस **प्रतिज्ञात भूमि** में पहुंचाया जो **परमेश्वर के राज्य** का **एक प्रकार** था, वह **अत्यन्त उत्तम** देश है। **यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो,** तो हम को उस देश में, जिसमें **दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं,** पहुँचाकर उसे **हमें दे देगा।** केवल इतना करो कि तुम यहोवा के **विरुद्ध बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो,** क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है।" गिनती 14:7-9

निर्गमन 23:20-33 "सुन, **मैं** एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूँ जो मार्ग में **तेरी रक्षा करेगा**, और जिस स्थान को **मैं** ने तैयार किया है उसमें **तुझे पहुँचाएगा।** (21) उसके सामने सावधान रहना, और उसकी **मानना**, उसका **विरोध** न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिये कि उसमें मेरा नाम रहता है। (22) यदि

तू सचमुच **उसकी माने** और **जो कुछ मैं कहूँ वह करे, तो मैं** तेरे शत्रुओं **का शत्रु** और तेरे द्रोहियों का **द्रोही** बनूँगा। (23) इस रीति **मेरा दूत तेरे आगे आगे चलकर** तुझे ऐमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा, और मैं उनका सत्यानाश कर डालूँगा। (24) **उनके देवताओं को दण्डवत् न करना**, और न उनकी **उपासना करना**, और न **उनके से काम करना**, वरन् उन **मूरतों का पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना**, और उन लोगों की लाटों को टुकड़े टुकड़े कर देना। (25) **तू अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना,** तब वह तेरे अन्न जल पर **आशीष देगा,** और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। (26) तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बाँझ होगी; और तेरी आयु **मैं** पूरी करूँगा। (27) जितने लोगों के बीच तू जाएगा उन सभों के मन में **मैं** अपना भय पहले से ऐसा समवा दूँगा कि उनको व्याकुल कर दूँगा, और **मैं** तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊँगा। (28) और **मैं** तुझ से पहले बर्रे भेजूँगा जो हिब्बी, कनानी, और हित्ती लोगों को तेरे सामने से भगा के दूर कर देंगी। (29) मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में न निकाल दूँगा, ऐसा न हो कि देश उजाड़ हो जाए, और बनैले पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें। (30) जब तक तू **फूल फलकर देश को अपने अधिकार** में न कर ले तब तक **मैं** उन्हें तेरे आगे से थोड़ा थोड़ा करके निकालता रहूँगा। (31) **मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों के समुद्र तक और जंगल से लेकर महानद** तक के देश को तेरे वश में कर दूँगा; **मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने सामने से बरबस निकालेगा।** (32) **तू न तो उनसे वाचा बाँधना और न उनके देवताओं से।**

(33) वे **तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएँ**; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।" (1 तिमु 3:7; 6:9; 2 तिमु 2:26)

ये ऐमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी अंधकार की शक्तियों और अधिकारियों का न सिर्फ एक प्रकार है बल्कि सदोम और अमोरा के समान पापी और अनैतिक संस्कृति का प्रतीक भी है जो इतने दूर हो गए कि परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया और यह न चाहा कि उनकी दुष्टता जारी रहे और अन्य लोगों में भी फैले।

2 कुरि. 6:14-18 अविश्वासियों के साथ असमान **जूए में न जुतो,** क्योंकि **धार्मिकता और अधर्म** का क्या मेल-जोल? या **ज्योति और अन्धकार** की क्या संगति? (15) और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? (16) और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि **हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं;** जैसा परमेश्वर ने कहा है, "**मैं उनमें** बसूँगा और उनमें **चला फिरा** करूँगा; और **मैं** उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे। (17) इसलिये प्रभु कहता है, **"उनके बीच में से निकलो और अलग रहो;** और अशुद्ध वस्तु मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; (18) और **मैं** तुम्हारा पिता हूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।"

सकरा फाटक

परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब **वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।** मत्ती 6:33

चौड़ा फाटक – अवज्ञाकारिता और विरोध

1 कुरि. 10:1-13 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब बाप दादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। (2) और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया; (3) और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया; (4) और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था। (5) परन्तु **परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न न हुआ,** इसलिये वे जंगल में **ढेर हो गए।** (मृत्यु का पाप – शारीरिक मृत्यु) (6) ये बातें **हमारे लिये दृष्टान्त** ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, **वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें;** (7) और न तुम **मूर्तिपूजक** बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, "लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे।" (वे सुखवादी थे, वे सुख विलास के पुजारी थे और उसकी खोज में लगे रहते थे) (8) और न हम **व्यभिचार** करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में **तेईस हजार मर गये।** (9) और न हम प्रभु को **परखें,** जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा नष्ट किए गए। (गिनती 21:5-7) (10) और न तुम **कुड़कुड़ाओ**, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा **नष्ट** किए गए। (11) परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं**, दृष्टान्त** की रीति पर थीं; और वे **हमारी चेतावनी** के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं **लिखी गईं हैं।**

(12) इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।

इन सब के बाद, जब वे अंततः "प्रतिज्ञा किए हुए स्थान" पर आए तो एक बार फिर बहुतों ने उस स्थान पर प्रवेश करना न चाहा क्योंकि इसमें उस स्थान पर रहने वाले **दुष्ट लोगों** (हमारे जीवन के पाप) **से लड़ना और उन सब को बाहर निकालना शामिल था।**

मूसा ने सब लोगों के लिए प्रार्थना की : यहोवा ने कहा, "तेरी विनती के अनुसार **मैं क्षमा करता हूँ**; … (22) उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी **दस** बार **मेरी परीक्षा की**, और **मेरी बातें नहीं मानीं,** (23) इसलिये जिस देश के विषय मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएँगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा। गिनती 14:20

- जो बलवा करने वाले थे, वे परमेश्वर के साथ **"लहू की वाचा"** में थे, उन्हें क्षमा प्राप्त थी – उनके पास अनंत जीवन था – लेकिन उन्होंने इस पृथ्वी पर कभी भी "दूध और शहद" से भरपूर परमेश्वर के राज्य का **आनन्द नहीं उठाया था।**
- जिन्होंने विश्वास द्वारा इस बात का यकीन किया और आज्ञा पालन किया, उन्हें एक अन्य महान अगुवे, **यहोशु,** के द्वारा "प्रतिज्ञात देश" में लाया गया।
    - **यहोशु** अन्य नौजवानों के समान नहीं था निर्गमन 33:7-11
    - **कालेब** अन्यों के समान नहीं था गिनती 14:24
    - **दाऊद** अन्यों के समान नहीं था प्रेरितों के काम 13:22

ये पद दाऊद के मन को, उसके चरित्र को प्रकट करते हैं :

भजन 26:3-7; 101:1-4 (3) मैं किसी अनूचित बात को अपनी आँखों के सामने न रखूँगा

- जिस प्रकार शैतान ने यीशु को संसार के राज्य दिखाए थे, उसी प्रकार वह आपको पाप करने के लिए उकसाएगा और आपकी आँखों के सामने लुभावनी बातों को लाएगा।

- मैं आपको बल देकर यह कहता हूँ कि दाऊद के समान हों और **कभी** भी किसी ऐसी अनुचित या अनैतिक बात **न करें** जिसे शैतान ने सब स्थानों में महत्वपूर्ण बनाया हुआ है। शरीर की लालसाएं इतनी बलशाली हैं कि हम में से प्रत्येक को उस पर जय पा कर उसे निकाल फेंकना चाहिए।
  देखें याकूब 1:12, 13-15

यहोशु परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञात देश में ले गया परन्तु **उन्हें उसके लिए लड़ना था** क्योंकि वह देश **दुष्ट लोगों के अधिकार में था।** हमारे जीवन में जितनी दुष्टता होगी हमें देश को पूरी तरह से साफ़ करने में उतना ही अधिक युद्ध करना होगा।

यहोशु 1:1-9 . . . (7) तू केवल **हियाव बांध** और **अत्यधिक दृढ़** हो। मेरे दास मूसा ने जो **व्यवस्था** दी है उसकी **सब आज्ञाओं के अनुसार** व्यवहार करने के लिए सावधान रह। उनसे न दाहिने **मुड़ना** न बाएं जिस से **जहां जहां भी तू जाए वहां वहां सफलता प्राप्त करे।** (8) व्यवस्था की यह **पुस्तक** तेरे मुंह से कभी **दूर न हो**, परन्तु इस पर **दिन-रात ध्यान करते रहना** जिस से तू उसमें **लिखी हुई बातों** के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके। **तब तू अपने मार्ग को सफल बना सकेगा और सफलता प्राप्त करेगा।** (9) क्या मैंने तुझे आज्ञा नहीं दी है? हियाव बांध और दृढ़ हो। न डर और न हताश हो, क्योंकि **जहां जहां भी तू जाए वहां वहां तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे साथ रहेगा।"**

- "व्यवस्था की पुस्तक" इस बात के लिए हमारे सृष्टिकर्ता के निर्देश हैं, या संचालन करने की हस्तपुस्तिका है, कि हम राज्य में रहते हुए कैसे दीर्घ आयु, अच्छा स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि का जीवन पाएं।

- परन्तु जिस प्रकार इस्राएली रहे और मिस्र में बंधुवे रहे, उसी प्रकार हम भी इस संसार में इसके दुष्ट शासक के अधीन रहे हैं उसकी दुष्टता और विनाशकारी बातों को सीखा है जिसने हमें बहुत हानि पहुंचाई है।

- हमारे पिता ने अपने पुत्र को भेजा, जैसे मिस्र में उसने फसह का मेमना भेजा था, कि **उसके लहू से हम छुड़ाए जाएं**, हम **स्वतंत्र** हों और उसके राज्य में लाए जाएं (कुलु. 1:13)। और ...

यदि हम "प्रतिज्ञात देश", परमेश्वर के राज्य के बहुतायत के जीवन और आशीषों का आनंद लेना चाहते हैं तो हमें युद्ध करके सारी दुष्टाताओं को निकाल फेंकना होगा।

एक आत्मिक युद्ध चल रहा है और उस युद्ध का उद्देश्य आपको हराना और परमेश्वर के राज्य से बाहर रखना है ... क्योंकि राज्य में शत्रु आपको छू भी नहीं सकता (1 यूहन्ना 5:18)

और जिस प्रकार उसके बहुत से "लोगों" ने शत्रुओं को देश से निकालना न चाहा ... उसी प्रकार आज भी परमेश्वर के बहुत से लोग परमेश्वर के राज्य में वास नहीं करते बल्कि "पाप के आनन्द" को चुनते हैं जो तुम्हें बंदी बना लेता है और बहुत हानि और चोट पहुंचाता है। 2 तीमुथियुस 2:24-26

"**मार्ग चौड़ा"** और **सरल** इसलिए है क्योंकि आप विनाश की ओर ले जाने वाले अनेक मार्गों से केवल **भीड़ के पीछे पीछे चलते हैं।**

लेकिन **"एक सकरा मार्ग"** भी है जो "बहुतायत के जीवन" और सच्ची स्वतंत्रता की ओर ले जाता है – और वह मार्ग **प्रभु का मार्ग** है – परमेश्वर के राज्य में जीवन।

यीशु ने कहा :

> मैं इसलिए आया हूँ कि वे **जीवन** पाएं, और **बहुतायत** से पाएं। यूहन्ना 10:10
>
> मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यूहन्ना 14:6

- . . . अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश **होता जा रहा** है, और **प्रबल मनुष्य उस पर बलपूर्वक अधिकार कर लेते हैं**। [एक बहुमूल्य पुरस्कार के रूप में – स्वर्गीय राज्य के भाग को बहुत तीव्र उत्साह और कठोर परिश्रम से खोजा जाता है] मत्ती 11:12

- प्रेरितों के काम 14:21-22 और उस नगर में सुसमाचार सुनाने तथा बहुत-से चेले बनाने के पश्चात्, वे लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए, और चेलों के मनों को

स्थिर करते और विश्वास में स्थिर बने रहने के लिए यह कह कर प्रोत्साहित करते रहे, "**हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।"**

हम में से प्रत्येक, निरंतर यह सोचे और अपने आप से पूछे : **मैं कौन से पथ पर हूँ? यह मुझे कहाँ ले जाएगा? यह मुझे कौन से राज्य की ओर ले जा रहा है? इसके परिणाम क्या होंगे?**

यह "चौड़ा मार्ग" और **साथियों का दबाव** बहुत प्रेरणादायक होता है, तथा "**पाप के आनंद**" बहुत लुभावने और विवश कर देनेवाले होते हैं परन्तु इसका अंत "**विनाश**" होता है।

तुम उन जातियों की प्रथाओं पर मत चलना जिनको मैं तुम्हारे सामने से निकालूँगा, क्योंकि उन्**होंने ये सब काम किए हैं** और इस कारण **मुझे उनसे घृणा है।** लैव्यवस्था 20:23

यिर्मयाह 10:2 अन्यजातियों की **चाल** को मत सीखो, (3) लोगों की **प्रथाएं** तो छलावा हैं

यीशु ने कहा : मैं तुम से **सच सच** कहता हूँ कि **जो कोई** पाप करता है वह पाप का **दास** है। यूहन्ना 8:34

- "चौड़ा फाटक" और "चौड़ा मार्ग" **दासत्व**, हानिकारक और विनाशकारक जीवन की ओर ले जाता है। जैसा हम जानते हैं : चोर (शैतान) केवल **चोरी करने, मार डालने,** और **नाश करने** को आता है। यूहन्ना 10:10

यूहन्ना 8:35-36 दास सर्वदा घर में नहीं रहता, पुत्र सर्वदा रहता है। इसलिए यदि **पुत्र** तुम्हें **स्वतंत्र** करेगा तो तुम **सच सच स्वतंत्र** हो जाओगे।

- पुत्र के पास दास को स्वतंत्र करने का अधिकार है। यीशु उन सब के साथ, जो उस पर **विश्वास करने** और **ग्रहण करने** के द्वारा उसके अधिकार को पहचानते हैं, यही करता है। उसने तो हमें अन्धकार के साम्राज्य से छुड़ा कर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है कुलुस्सियों 1:13

और फिर स्वतंत्र कर देता है: **यदि** तुम **मेरे वचन** में **बने रहोगे** (राज्य के मार्गों का पालन करना और सीखना) तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, और तुम **सत्य** को जानोगे और **सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।"** यूहन्ना 8:31-32

इस संसार के अनुरूप न बनो, परन्तु अपने **मन के नए हो जाने से** तुम **परिवर्तित** हो जाओ कि परमेश्वर की भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध इच्छा को तुम अनुभव से मालूम करते रहो। रोमियों 12:2

2 कुरिन्थियों 10:2-6 . . . कुछ लोगों पर जो हम को **शरीर के अनुसार चलनेवाले** समझते हैं, साहस दिखाने का विचार करता हूँ। (3) क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते हैं, तथापि हम शरीर के अनुसार युद्ध नहीं करते। (4) क्योंकि हमारे युद्ध के **हथियार** शारीरिक नहीं परन्तु **गढ़ों को ध्वस्त करने** के लिए **ईश्वरीय सामर्थ्य** से परिपूर्ण हैं। (5) हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली **कल्पनाओं** और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं, और **प्रत्येक विचार को बन्दी बना कर** मसीह का **आज्ञाकारी** बना देते हैं।. (6) जब भी तुम्हारी आज्ञाकारिता पूरी हो जाए तो सब प्रकार की अवज्ञा को दण्डित करने के लिए हम तैयार हैं।

यह हमारा युद्ध है – अपने मन के नए हो जाने के द्वारा परिवर्तन (जो सही है और गलत है, जो हम करते हैं और जो हम नहीं करते)।

- अपने मानसिक कंप्यूटर को री-प्रोग्राम करने के लिए ज़रूरी है खराब सॉफ्टवेर को हर दिन "परमेश्वर का वचन" पढ़ने, अध्ययन करने और कंठस्थ करने के द्वारा बदल देना।

और – हर विचार को बंदी बना लेने तथा उसे "वचन" जो कहता है उससे बदलकर उसको मानने के द्वारा।

- आपने अपने कितने विचारों को बंदी बनाया है या आप बनाते हैं?

यह वह युद्ध है जो हमें निरंतर लड़ना है और विजय पर विजय प्राप्त करनी है, तथा ऐमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी को एक एक करके निकालना है।

जब हम परमेश्वर के राज्य में बने रहते हैं तो हम **राज्य के नियमों** को **स्वीकार** करके उसके अनुसार **रहेंगे।** जो कहता है कि मैं उस में बना रहता हूँ तो वह स्वयं भी वैसा ही चले जैसा कि वह चलता था। 1 यूहन्ना 2:6

- भलाई से बुराई को जीत लो रोमियों 12:21
- अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो। रोमियों 12:14
- जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। मत्ती 5:39
- दया न्याय पर जयवन्त होती है। याकूब 2:13
- दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लूका 6:38

- क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई अपना प्राण यीशु के लिये खोएगा वही उसे बचाएगा।. लूका 9:24

- वे वस्त्र जो आप इस संसार के किसी भी वस्त्र से अधिक पहनने की इच्छा रखते हैं वह **राज्य के वस्त्र** हैं :

    - इफिसियों 6:10-18 परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्र **धारण करो**

    - नीतिवचन 3:21-22 ये बातें तेरी दृष्टि की ओट में न होने पाएँ, तब इन से तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का **हार** बनेंगे।

    - 1 पतरस 3:2-4 तुम्हारा श्रृंगार केवल दिखावटी न हो, जैसे बालों को गूंथना, सोने के आभूषण, और विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहिनना, वरन् यह तुम्हारा आंतरिक व्यक्तित्व हो, जो नम्र और शान्त मन वाले अविनाशी आभूषणों से **सुसज्जित** हो, जिसका परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा मूल्य है। (लैव्यवस्था 19:28)

      यह वचन बताता है कि बाहरी सुन्दरता से कहीं अधिक सुंदर और आकर्षक भीतरी सुन्दरता होती है और यही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

यूहन्ना 15:19 **यदि तुम संसार के होते तो** संसार अपनों से प्रेम करता, परन्तु इसलिए कि **तुम संसार के नहीं हो . . .**

- तो फिर हम पहनावे और कार्यों में इस संसार के **समान** क्यों बन जाते हैं? (जैसे लैव्यवस्था 19:28)

- हमारा पहनावा और कार्य क्या प्रदर्शित करते हैं कि हम किसे प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे हैं?

यूहन्ना 17:14 . . . क्योंकि जैसे **मैं संसार का नहीं** वैसे वे भी **संसार के नहीं।**

कुलुस्सियों 2:20 **यदि** तुम मसीह के **साथ संसार की प्रारम्भिक शिक्षाओं** के लिए मर चुके हो तो फिर **क्यों** उनके समान जो संसार में जीवन व्यतीत करते हैं, **ऐसी विधियों से बंधे हो** जैसे, . . . इस संसार और उसके मार्गों की जो परमेश्वर के राज्य के विपरीत और विरुद्ध हैं ????

भजन संहिता 1:1-3 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर **नहीं चलता,** न पापियों के मार्ग में **खड़ा** होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में **बैठता** है। (2) परन्तु **वह** तो **यहोवा की व्यवस्था** से **आनन्दित** होता और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन **मनन करता** रहता है। (3) वह उस वृक्ष के समान है जो जल-धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में **फलता है,** और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं: इसलिए **जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है।**

"ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठने" से सम्बंधित :

सत्य के लिए आजकल के **विश्वविद्यालय "चौड़े मार्ग"** पर जा रहे हैं। यह मानना कि सच **प्रासंगिक** है, अर्थात सच क्या है, उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है और जो उस समय सच है या जो एक व्यक्ति के लिए सच है वह दूसरी परिस्थिति में या दूसरे व्यक्ति के लिए हो सकता है सच न हो। यह मानना कि कुछ भी पूरी तरह से सही या गलत नहीं है, और उनके लिए यह स्वतंत्रता है।

परन्तु वे नहीं जानते : **हर एक** जो पाप करता है, पाप का **दास** है। हो सकता है वे "उस समय पाप में आनंदित हो रहे हैं" परन्तु इसका **परिणाम क्षतिग्रस्त जीवन** है।

सापेक्षवाद : यह एक विचारधारा है जो कहती है सत्य और नैतिक मूल्य सम्पूर्ण नहीं है परन्तु वे उन्हें थामे रखनेवाले लोगों और समूह से सम्बन्धित है।

- लोगों को इस पर विश्वास करना पसंद है। यह उनके विवेक को थोड़ा स्पष्ट कर देता है क्योंकि वे अपने सहयोगियों को प्रसन्न करने की इच्छा से भीड़ का अनुसरण करते हैं।

सापेक्षवाद अंधकार के राज्य से निकला कथन है और यह परमेश्वर के राज्य के बिलकुल विरुद्ध है।

व्यवस्थाविवरण 12:3 जैसा कि आज हम कर रहे हैं कि **जिसको जो भाता है वही करता है,** वैसा तुम **बिलकुल न** करना

बिलकुल सही और गलत दोनों होते हैं और दोनों परिणामों के साथ होते हैं

- स्वर्ग पूर्ण वास्तविकता है। और नरक भी पूर्ण वास्तविकता है।

- और स्वर्ग का एक ही मार्ग है प्रेरितों के काम 4:12

धोखा न खाओ: परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि **जैसा** बोओगे **वैसा ही काटोगे।** क्योंकि जो **अपने शरीर के लिए बोता है,** वह शरीर के द्वारा **विनाश की कटनी काटेगा**; परन्तु जो **पवित्र आत्मा के लिए बोता है,** वह पवित्र आत्मा के द्वारा **अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।** गलातियों 6:7-8

- वे जो "चौड़े फाटक" और चौड़े मार्ग" से होकर जा रहे हैं :
- वे पूर्ण सही और गलत को त्याग देते हैं।

- वे ज्योति की बजाय अंधकार को स्वीकार करते हैं
- वे सच को झूठ और झूठ को सच में बदल देते हैं
- वे कुरूप को सुंदर और सुन्दर को कुरूप पुकारते हैं
- जो लज्जाजनक बातों प्रशंसा पाते हैं

यशायाह 5:20-21 **हाय** उन पर जो **बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं,** जो **अन्धकार को प्रकाश** और **प्रकाश को अन्धकार** ठहराते, जो कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा **मानते** हैं! हाय उन पर जो अपने लेखे बुद्धिमान और अपनी दृष्टि में चतुर हैं!

फिलिप्पियों 3:18-21 क्योंकि मैं तुम से पहिले अनेक बार कह चुका हूं और अब भी रो-रोकर कहता हूं कि ऐसे बहुत हैं जो अपने आचरण से मसीह के **क्रूस के शत्रु हैं।** उनका अन्त **विनाश** है, उनका ईश्वर पेट है, वे **अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं** और **पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए** रहते हैं। परन्तु **हमारी नागरिकता स्वर्ग की है,** जहां से हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा **उत्सुकता** से कर रहे हैं।

इस संसार के राज्य के नियम परमेश्वर के राज्य के नियमों से बिलकुल विपरीत है।

लैव्यवस्था18:3-5 **तुम** मिस्र देश के कामों के अनुसार, जिसमें तुम रहते थे, **न करना;** और कनान देश के कामों के अनुसार भी, जहाँ मैं तुम्हें ले चलता हूँ, **न करना;** और **न** उन देशों की **विधियों पर चलना।** (4) तुमको मेरे ही **नियमों को मानकर** और **मेरी ही विधियों का पालन करके** उनके अनुसार चलना होगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ । (5) अतः **तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को मानना,** जो व्यक्ति **उनका पालन करेगा** वह उनके द्वारा **जीवित रहेगा।** मैं यहोवा हूँ।

लैव्यवस्था 18 आगे ऐसी अनैतिकताओं के बारे में बताता है जो विनाश को लेकर आते हैं।

यह बातें झूठ, छल, हानि, समस्याएं, पीड़ा, दरिद्रता, बंधुवाई, विनाश और मृत्यु को लाती हैं। और परमेश्वर की बातें सही सम्बन्ध, सच्चाई, शान्ति, आनंद और बहुतायत का जीवन लाती हैं।

2 पतरस 1:3-11 उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने उसी के **पूर्ण ज्ञान** के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा और सद्भावना के अनुसार बुलाया है, वह **सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है,** हमें प्रदान किया है। (4) क्योंकि उसने इन्हीं के कारण हमें अपनी **बहुमूल्य और उत्तम प्रतिज्ञाएं** दी हैं, जिससे कि तुम **उनके द्वारा** उस भ्रष्ट आचरण से जो वासना के कारण संसार में है, **छूट** कर ईश्वरीय स्वभाव के **सहभागी** हो जाओ। (5)

इसी कारण से **प्रयत्नशील** होकर, अपने **विश्वास** में सद्गुण तथा **सद्गुण** में ज्ञान, (6) और **ज्ञान** में संयम, संयम में **धीरज** और धीरज में **भक्ति**, (7) तथा अपनी भक्ति में **भ्रातृ-स्नेह**, और भ्रातृ-स्नेह में **प्रेम** बढ़ाते जाओ। (8) क्योंकि यदि ये गुण तुम में बने रहें तथा बढ़ते जाएं तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के पूर्ण ज्ञान में ये तुम्हें न तो अयोग्य और न निष्फल होने देंगे। (9) क्योंकि जिसमें ये गुण नहीं, वह अंधा है, अदूरदर्शी है। वह अपने पहिले के पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। (10) अतः हे भाइयो, अपने बुलाए जाने और चुने जाने की निश्चयता का और भी अधिक **प्रयत्न** करते जाओ, क्योंकि **इन बातों के प्रयत्न में जब तक रहोगे,** तुम **कभी ठोकर न खाओगे,** (11) और इसी प्रकार हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के **अनन्त राज्य में प्रवेश** के लिए तुम्हारा बड़ा स्वागत होगा।

प्रयत्नशील और चौकस रहने के लिए हमें यह चाहिए: "अतः तुम इस प्रकार प्रार्थना करना: 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। (10) **तेरा राज्य आए।** तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। मत्ती 6:9-10

- "पृथ्वी पर" – हम इसी के बने हैं। यदि हम गंभीरता से इस प्रार्थना को करें तो इसका अर्थ यह है कि हम यह इच्छा और विनती कर रहे हैं कि राजा हमारे जीवन में राज करे और हम उसकी आज्ञा को मानें। अतः इस निर्देश, उसके नियमों के अनुसार जीने के द्वारा; इसका परिणाम – हमारा जीवन ऐसा होगा :

- "जैसे स्वर्ग में" – "**धार्मिकता** और **शांति** और **आनंद**"

परमेश्वर के राज्य में रहने के लिए नियम आवश्यक हैं :

I. हमें ऐसे चलना है जैसे वह चलता था :

1 यूहन्ना 2:6 जो कहता है कि मैं उस में बना रहता हूँ तो वह स्वयं भी वैसा ही चले जैसा कि वह चलता था।

1 पतरस 2:21-23 तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक **आदर्श रखा कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।** (22) उसने **न** तो कोई **पाप** किया और न उसके मुंह से **छल** की कोई बात निकली। (23) उसने गाली सुनते हुए **गाली नहीं दी**, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दीं, पर अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है।

यूहन्ना 12:26 यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे **तो मेरे पीछे चले।** और जहाँ मैं हूँ मेरा सेवक भी होगा। **यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उसका सम्मान करेगा।**

शिष्यों ने उसकी आज्ञा का पालन किया और उसका अनुसरण किया और उनका सम्मान हुआ :
पतरस ने कहा, "देख, हम तो अपना घर-बार छोड़कर तेरे पीछे चल पड़े हैं।" (29) उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं जिसने अपना घर, पत्नी, भाई, माता-पिता या बच्चों को परमेश्वर के **राज्य** के लिए छोड़ा हो, (30) और वह **इस समय कई गुणा अधिक** तथा आने वाले युग में **अनन्त जीवन** न पाए।" लूका 18:28-30

II. हमें दान देने का जीवन जीना चाहिए

राज्य का नियम है : दिया करो तो तुम्हें भी दिया जाएगा। (लूका 6:38). इस दुनिया का नियम है "पहले पकड़ो, ले लो, रख लो और फिर अधिक की खोज करो"।

परमेश्वर के राज्य में आप : हार कर जीतते हैं/ मर कर जीते हैं/ देकर प्राप्त करते हैं/ नीचे जाकर ऊपर जाते हैं।

यीशु ने प्रभु अर्थात राजा के कार्य के प्रति निष्ठा और विश्वासयोग्यता के महत्व और जरूरत को व्यक्त किया:

लूका 12:42 प्रभु ने कहा, "**ऐसा विश्वासयोग्य** और समझदार भण्डारी **कौन है** जिसे उसका स्वामी अपने सेवकों के ऊपर अधिकारी नियुक्त करे कि वह उन्हें ठीक समय पर भोजन-सामग्री दे?

लूका 16:10-13 **जो** अत्यन्त छोटी-सी बात में **विश्वासयोग्य है,** वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है। और जो अत्यन्त छोटी बात में अधर्मी है (विश्वासयोग्य = धर्मी), वह बहुत में भी अधर्मी है। (11) अतः यदि तुम अधर्म के धन में **विश्वासयोग्य** न रहे तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा? (12) यदि तुम पराए का धन उपयोग करने में **विश्वासयोग्य** न रहे तो जो तुम्हारा अपना है, उसे तुम्हें कौन देगा?

राज्य नियमों के अनुसार विश्वासयोग्य जीवन जीने से इस पृथ्वी के राज्य में हमारे आस पास धीरे धीरे एक बदलाव आएगा। यह दाऊद राजा के काम से प्रदर्शित होता है :

1 शमुएल 30:23-25 तब दाऊद ने कहा, "मेरे भाइयो, यहोवा ने हम को जो कुछ दिया है . . . . . और इस बात में कौन तुम्हारी सुनेगा? क्योंकि युद्ध में जाने वाले को जितना भाग मिलता है उतना ही समान के पास बैठने वाले को मिलता है। दोनों बराबर बराबर भाग पाएंगे। (25) उस दिन से आगे यही नियम लागू है क्योंकि उसने इस्राएल के लिए ऐसी ही विधि और नियम ठहरा दिया जो आज तक है।

इसी तरह, यीशु ने बिना भेद-भाव के अकसर सब को चंगाई दी और भोजन दिया। दूसरे शब्दों में उसमें से सब के लिए राज्य की आशीषें बह निकली।

मत्ती 10:8 बीमारों को चंगा करो, मृतकों को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्ट आत्माओं को निकालो। तुमने मुफ़्त पाया है, मुफ़्त में दो।

राज्य नियमों के अनुसार जीना और आशीषों को प्राप्त करना, और उसके उपरांत अपने चारों ओर, अपने समुदाय के प्रति सामर्थी गवाह ठहरते हैं, जो प्रत्येक के जीवन जीने के तरीके को और परस्पर व्यवहार को परिवर्तित कर सकता है।

जो कुछ आपके पास है उससे जो कुछ आप **विश्वासयोग्यता** के साथ करते हैं, वह प्रतिफल की कुंजी है।

.

> इब्रानियों 11:6 **विश्वास के बिना** उसे प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पास आता है, उसके लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि वह है, और अपने खोजने वालों को **प्रतिफल देता** है।

कर्मठता – हर कार्य को परमेश्वर द्वारा दिए गए विशेष कार्य के रूप में देखना और उसे पूरा करने के लिए अपनी सारी ताकत लगा देना

> कुलुस्सियों 3:23 जो कुछ तुम करते हो, उस कार्य को मनुष्यों का नहीं वरन् प्रभु का समझकर तन-मन से करो,

जिम्मेवारी – जिस बात की परमेश्वर और अन्य लोग मुझसे अपेक्षा कर रहे हैं उसे जानना और करना।

> रोमियों 14:12 इसलिए, हम में से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

मरकुस 1:15 समय पूरा हुआ है, और **परमेश्वर का राज्य** निकट है, **मन फिराओ** और सुसमाचार पर विश्वास करो।"

- मन फिराने का अर्थ – अपने मन को बदलना, अपनी सोच को बदलना

मरकुस 4:26-34 उसने कहा, "**परमेश्वर का राज्य ऐसा है** जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज डाले, (27) और रात को सो जाए और दिन को जाग जाए और वह बीज अंकुरित होकर बढ़े-वह व्यक्ति स्वयं नहीं जानता कि यह कैसे होता है। (28) भूमि अपने आप फसल उपजाती है, पहिले अंकुर, तब बालें, और तब बालों में

तैयार दाने। (29) परन्तु जब फसल पक जाती है, तो वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंचती है।

राई के बीज का दृष्टांत : मरकुस 4:30-32
और उसने कहा, "**परमेश्वर के राज्य** की उपमा हम किससे दें, अथवा किस दृष्टान्त के द्वारा हम उसका वर्णन करें? (31) **वह राई के बीज के समान है।** जब वह भूमि में बोया जाता है यद्यपि भूमि के सब बीजों से छोटा होता है, (32) फिर भी जब वह बोया जाता है तो उगकर बगीचे के सब पौधों से बड़ा हो जाता है, और उसमें बड़ी बड़ी शाखाएं निकलती हैं, जिससे कि आकाश के पक्षी भी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।"
लूका 7:28 मैं तुम से कहता हूं कि स्त्रियों से जो उत्पन्न हुए हैं उनमें से कोई भी यूहन्ना से बड़ा नहीं, फिर भी वह जो **परमेश्वर के राज्य** में छोटे से छोटा है वह उस से बढ़कर है।"

मत्ती 5:3 "धन्य हैं वे जो **मन के दीन** हैं, क्योंकि स्वर्ग का **राज्य** उन्हीं का है। *नम्र, अहंकारी या घमंडी नहीं

मत्ती 5:10 धन्य हैं वे जो **धार्मिकता** के कारण **सताए** जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

1 पतरस 3:14 फिर भी यदि धार्मिकता के लिए कष्ट सहो तो धन्य हो। उनकी डांट-डपट से न तो भयभीत हो और न ही दुखित हो

मत्ती 19:14-15 यीशु ने कहा, "**बच्चों** को मेरे पास आने दो, उन्हें मत रोको, क्योंकि **स्वर्ग** का राज्य **ऐसों ही का है।**"

मत्ती 25:34 हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस **राज्य के अधिकारी** हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।

लूका 22:29-30 और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, तुम **मेरे राज्य** में मेरी मेज़ पर खाओ और पीओ

इब्रानियों 12:28-29 अतः जब **हमें ऐसा राज्य मिलने पर है** जो अटल है तो आओ, हम **कृतज्ञ होकर आदर** और **भय** सहित परमेश्वर की ऐसी उपासना करें जो उसे ग्रहणयोग्य हो, (29) क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।